उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2019

विषय

सामान्य हिन्दी

सविस्तृत

MADE EASY Publications

MADE EASY Publications

Corporate Office: 44-A/4, Kalu Sarai (Near Hauz Khas Metro Station), New Delhi-110016
E-mail: infomep@madeeasy.in
Contact: 011-45124660, 08860378007
Visit us at: www.madeeasypublications.org

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2019)
विषय : सामान्य हिन्दी

© Copyright, by MADE EASY Publications.
All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted in any form or by any means (electronic, mechanical, photo-copying, recording or otherwise), without the prior written permission of the above mentioned publisher of this book.

प्रथम संस्करण : 2020

MADE EASY PUBLICATIONS has taken due care in collecting the data and providing the solutions, before publishing this book. Inspite of this, if any inaccuracy or printing error occurs then MADE EASY PUBLICATIONS owes no responsibility. MADE EASY PUBLICATIONS will be grateful if you could point out any such error. Your suggestions will be appreciated.

© All rights reserved by MADE EASY PUBLICATIONS. No part of this book may be reproduced or utilized in any form without the written permission from the publisher.

प्रस्तावना

B. Singh (Ex. IES)

अधिकतर प्रतियोगी परीक्षाओं, खासकर राजकीय लोक सेवा आयोगों द्वारा आयोजित परीक्षाओं में हिन्दी विषय का विशेष स्थान है। यह विषय हमेशा से अभ्यथियों को इन परीक्षाओं में सफलता दिलाने में सहायक रहा है।

यह **सामान्य हिन्दी** पुस्तिका उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC) (सम्मिलित राज्य अभियंत्रण सेवा परीक्षा-2019) को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में इस परीक्षा के पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं का समावेश करते हुए इसके प्रत्येक प्रकरण को सरल एवं सुबोध शैली में प्रस्तुत किया गया है। इसमें संधि, समास, उपसर्ग, पर्यायवाची-विलोम शब्द, शब्द-शुद्धि, वाक्य-शुद्धि, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, सहित व्याकरण के अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं को भी शामिल किया गया है।

यह पुस्तक स्वयं में सम्पूर्ण है और हिन्दी की परीक्षा की दृष्टि से यह ध्यान रखा गया है कि इसमें सभी आवश्यक तथ्यों को शामिल किया जाए।

हमें आशा और विश्वास है कि यह पुस्तिका अभ्यर्थियों के लिए उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और उनका सही दिशा में मार्गदर्शन करेगी। पुस्तक की उत्कृष्टता बढ़ाने के लिए आपका बहुमुल्य सुझाव आमंत्रित है।

शुभकामनाओं सहित धन्यवाद

B. Singh
CMD, MADE EASY Group

विषय-सूची

सामान्य हिन्दी

अध्याय 1 हिन्दीः एक संक्षिप्त परिचय 1

भाषा 1
हिन्दी भाषा का विकास 1
वर्ण का स्वरूप 2
हिन्दी के स्वरवर्ण 3
हिन्दी के व्यंजनवर्ण 3
विराम चिन्ह 4
विराम चिन्ह के भेद 4
शब्द रचना 5
व्याकरणिक प्रकार्य के आधार पर शब्द भेद 6
विकारी शब्द 6
संज्ञा 6
संज्ञा के भेद 6
संज्ञा के रूपांतर 7
सर्वनाम 8
विशेषण 9
क्रिया 9
काल 10
अविकारी शब्द 11
समुच्चयबोधक 11
क्रियाविशेषण 11
सम्बन्धबोधक 12
विस्मयादिबोधक 12
वाक्य रचना 12
वाक्यांश 12
वाक्य के भेद 12
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 14

अध्याय 2 संधि 17

संधि 17
स्वर संधि 17
दीर्घ संधि 17
गुण संधि 18
वृद्धि संधि 19
यण् संधि 19
अयादि संधि 20
व्यंजन संधि 20
विसर्ग संधि 22
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 23

अध्याय 3 **समास 27**

समास....27
समास के प्रकार....27
अव्ययीभाव समास....27
तत्पुरुष समास....28
उपपद तत्पुरुष....28
लुप्तपद तत्पुरुष....29
नञ् समास....29
द्विगु समास....29
कर्मधारक समास....30
द्वन्द्व समास....30
बहुब्रीहि समास....31
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....23

अध्याय 4 **उपसर्ग एवं प्रत्यय 35**

उपसर्ग....35
उपसर्ग के प्रकार....35
संस्कृत के उपसर्ग....35
हिन्दी के उपसर्ग....36
विदेशी उपसर्ग....37
प्रत्यय....38
प्रत्यय के प्रकार....38
कृदन्त प्रत्यय....39
तद्धित प्रत्यय....39
उर्दू के प्रत्यय....40
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....41

अध्याय 5 **पर्यायवाची एवं विलोम शब्द 45**

पर्यायवाची शब्द....45
विलोम शब्द....48
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....56

अध्याय 6 **लिंग, वचन एवं कारक 57**

लिंग....57
लिंग के प्रकार....57
पुल्लिंग....60
पुल्लिंग शब्द की पहचान....60
स्त्रीलिंग....60
स्त्रीलिंग शब्द की पहचान....60
वचन....60
कारक....62
कारक-चिन्ह स्मरण करने के लिए सूत्र....62
कारक के भेद....62
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....68

अध्याय 7 **अनेकार्थी शब्द 67**

अनेकार्थी शब्द....67
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष....72

अध्याय 8 वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 75

वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द 75

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 79

अध्याय 9 शब्द युग्मों का अर्थ भेद 83

शब्द युग्मों का अर्थ भेद 83

वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 89

अध्याय 10 शब्द शुद्धि एवं वाक्य शुद्धि 93

शब्द शुद्धि 93
वाक्य अशुद्धि 102
अनावश्यक शब्द के कारण वाक्य अशुद्धि 102
अनुपयुक्त शब्द के कारण 102
लिंग सम्बन्धी 103
वचन सम्बन्धी 103
क्रमभंग सम्बन्धी 103
कारक सम्बन्धी 103
सर्वनाम सम्बन्धी 104
क्रिया सम्बन्धी 105
मुहावरे के कारण 105
संयोजक शब्द सम्बन्धी 105
अशुद्ध वर्तनी के कारण 105
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 106

अध्याय 11 मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ 109

मुहावरे 109
मुहावरे की विशेषताएं 109
लोकोक्ति 116
लोकोक्ति शब्द का अर्थ 116
मुहावरा और लोकोक्ति में अंतर 116
समानता 116
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 122

अध्याय 12 तत्सम, तदभव, देशज एवं विदेशज शब्द 127

तत्सम शब्द 127
तद्भव शब्द 127
देशज शब्द 130
अरबी शब्द 131
फारसी शब्द 132
तुर्की शब्द 132
पुर्तगाली शब्द 132
वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष 133

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 1 ..... 137 – 142

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 2 ..... 143 – 148

वस्तुनिष्ठ अभ्यास प्रश्नकोष – 3 ..... 149 – 154

अध्याय 6

लिंग, वचन एवं कारक

लिंग

लिंग शब्द अंग्रेजी के 'Gender' शब्द के लिए प्रयुक्त होता है। लिंग शब्द का अर्थ है चिन्ह या पहचान का साधन। शब्द के जिस रूप से यह पता चले कि वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का, उसे व्याकरण में लिंग कहते हैं।

लिंग के प्रकार

ifYyx vkj L=hçyx

प्रत्येक संज्ञा शब्द या तो पुल्लिगवाची होगा अथवा स्त्रीलिंगवाची, क्योंकि बिना लिंग से जुड़े वह वाक्य में प्रयुक्त नहीं हो सकता। वाक्य में क्रिया का रूप संज्ञा के लिंग (तथा वचन) के अनुसार बदलता है। जैसे – 'घोड़ा दौड़ता है/घोड़ी दौड़ती है।' साथ ही अनेक विशेषण शब्द भी संज्ञा के लिंग के अनुसार परिवर्तित होते हैं, जैसे– 'काला घोड़ा /काली घोड़ी'।

mHk;çyxh 'kCn% कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जिनका प्रयोग दोनों लिंगों (पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग) में हो सकता है। इन शब्दों में लिंग परिवर्तन नहीं होता। जैसे– प्रधानमंत्री, मंत्री, इंजीनियर, डॉक्टर, मैनेजर आदि।

mnkgj.k%

(i) प्रधानमंत्री पधार रहे हैं।
(ii) डॉक्टर घर चली गई हैं।
(iii) श्री लंका की प्रधानमंत्री कल विदेश जा रही हैं।
(iv) डॉक्टर बुला रहे हैं।

पुल्लिग

जिन संज्ञा शब्दों से पुरूष जाति का बोध हो अथवा जो शब्द पुरूष जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं, वे पुल्लिग हैं। **t\|l%** कुत्ता, लड़का, घर, पेड़, सिंह आदि

पुल्लिग शब्द की पहचान

1- आ, आव, पा, पन, न– ये प्रत्यय जिन शब्दों के अंत में हों, वे प्रायः पुल्लिग होते हैं।
t\|l% मोटा, चढ़ाव, बुढ़ापा, लड़कपन, लेन–देन।

2- पर्वत, मास, वार और कुछ ग्रहों के नाम पुल्लिग होते।
t\|l% विन्ध्याचल, हिमालय, वैशाख, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध आदि।

3- पेड़ों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% पीपल, नीम, आम, शीशम, सागौना, जामुन, आदि।

4- अनाजों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% बाजरा, गेहूं, चावल, चना, मटर, जौ, उड़द, आदि।

5- पदार्थों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% पानी, सोना, तांबा, लोहा, घी, तेल आदि।

6- रत्नों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% हीरा, पन्ना, मूंगा, मोती, माणिक आदि।

7- देह के अवयवों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% मस्तक, दाँत, हाथ, कान, गला, तालु, रोम आदि।

8- जल, स्थल और भूमण्डल के भागों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% समुद्र, भारत, देश, नगर, द्वीप, आकाश, पाताल, घर, सरोवर आदि।

9- वर्णमाला के अनेक अक्षरों के नाम पुल्लिग होते हैं।
t\|l% अ, उ, ए, ओ, क, ख, ग, ध, च, छ, य, र, ल, व, श आदि।

fuR; içYyx 'kCn% तोता, मच्छर, कौवा, विच्छू आदि।

स्त्रीलिंग

जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो अथवा जो शब्द स्त्री जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं, वे स्त्रीलिंग हैं।

t\|l% गाय, घड़ी, लड़की, कुर्सी, छड़ी, नारी आदि।

स्त्रीलिंग शब्द की पहचान

1- जिन संज्ञा शब्दों के अंत में 'ख' होता है, तो स्त्रीलिंग कहलाते हैं। **tSlS%** ईख, भूख, चोख, राख आदि।

2- जिन भाववाचक संज्ञाओं के अंत में ट, वट या हट होता है, वे स्त्रीलिंग कहलाती हैं। **tSlS%** झंझट, आहट, चिकनाहट, बनावट, सजावट आदि।

3- अनुस्वारांत, ईकारांत, ऊकारांत, तकारांत, सकारांत, संज्ञाएं स्त्रीलिंग कहलाती हैं। **tSlS%** रोटी, टोपी, नदी, चिट्ठी, उदासी, रात, बात, छत, भीत, लू, साँस आदि।

4- भाषा, बोली और लिपियाँ के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **tSlS%** हिन्दी, संस्कृत, देवनागरी, पहाड़ी, तेलुगु, पंजाबी, आदि।

5- जिन शब्दों के अंत में 'इया' आता है, वे स्त्रीलिंग होते हैं। **tSlS%** कुटिया, खटिया, लुटिया, चिड़िया आदि।

6- नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **tSlS%** यमुना, गंगा, गोदावरी, ताप्ती, आदि।

7- तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **tSlS%** पहली, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा, आदि।

8- पृथ्वी ग्रह स्त्रीलिंग है।

9- नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **tSlS%** अश्विनी, रोहिणी, भरणी, आदि।

L=h çR;;

शब्दों का लिंग परिवर्तन पुल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए जो चिन्ह लगाये जाते हैं, वे स्त्री प्रत्यय कहलाते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख प्रत्यय इस प्रकार हैं– ई, इया, इन, नी, आनी, आइन, आ, इका, इनी (इणी), आदि।

वाक्यों में लिंग-निर्णय

हिन्दी में लिंगों की अभिव्यक्ति वाक्यों में होती है, तभी संज्ञा शब्दों का लिंगभेद स्पष्ट होता है। **tSls &**

विशेषण में

यह **cMk** मकान है। ('मकान' पुल्लिंग के अनुसार)
यह **cMh** पुस्तक है। ('पुस्तक' स्त्रीलिंग के अनुसार)
यह **NkVk** कमरा है। ('कमरा' पुल्लिंग के अनुसार)

सर्वनाम में

ejk घर बड़ा है। ('घर' पुल्लिंग के अनुसार)
mldh कलम खो गई है। ('कलम' स्त्रीलिंग के अनुसार)
mldk स्कूल बंद है। ('स्कूल' पुल्लिंग के अनुसार)

क्रिया में

बुढ़ापा **vk x;k**। ('बुढ़ापा' पुल्लिंग के अनुसार)
भात **idk g**। ('भात' पुल्लिंग के अनुसार)
दाल **cuh** है। ('दाल' स्त्रीलिंग के अनुसार)

विभक्ति में

आप**dk** चरित्र अच्छा है। ('चरित्र' पुल्लिंग के अनुसार)
आप**dh** नाक कट गई है। ('नाक' स्त्रीलिंग के अनुसार)

प्रत्यय में

1- ***vkuh* çR;; ls cuus okys L=hçyx 'kCn ¼v & vkuh A vk.kh½**

iqfYyx	**L=hçyx**
नौकर	नौकरानी
क्षत्रिय	क्षत्राणी
जेठ	जेठानी
चौधरी	चौधरानी
मेहतर	मेहतरानी
मुगल	मुग़लानी
देवर	देवरानी
भव	भवानी

2- ***vkbu* çR;; ls cuus okys L=hçyx 'kCn ¼v] vk] Ã] Å] , → vkbu½**

iqfYyx	**L=hçyx**
पंडित	पंडिताइन
पंडा	पंडाइन
ठाकुर	ठकुराइन
चौधरी	चौधराइन
ओझा	ओझाइन

3- ***Ã* çR;; ls cuus okys L=hçyx 'kCn ¼v] vk → Ã½**

i¢Yyx	L=h¢yx
लड़का	लड़की
घोड़ा	घोड़ी
बच्चा	बच्ची
कबूतर	कबूतरी
रस्सा	रस्सी
तरुण	तरुणी
देव	देवी

4- ^n;k* çR;; I cuu oky L=h¢yx 'kCn ¼vk&M;k½ *vk* vir oky 'kCnk e *vk* dk yki gk tkrk g vkj mud LFkku ij & *Ã* çR;; yx tkrk gA

i¢Yyx	L=h¢yx
बूढ़ा	बुढ़िया
चूहा	चुहिया
चिड़ा	चिड़िया
बंदर	बंदरिया
बेटा	बिटिया
डिब्बा	डिबिया

कुछ 'अ/आ' अन्त वाले शब्दों के 'अ/आ' का लोप हो जाता है तथा उनके स्थान पर –'इया' प्रत्यय आ जाता है। इसके साथ–साथ :

– मूल शब्द का पहला स्वर ह्रस्व हो जाता है।

– यदि मूल शब्द में व्यंजन द्वित्व है (कुत्ता) तो एक व्यंजन का लोप हो जाता है (कुतिया)।

5- ^bu* çR;; I cuu oky L=h¢yx 'kCn & ey 'kCn d vfre Loj dk yki gk tkrk g vkj mld LFkku ij &*bu* çR;; vk tkrk gA

i¢Yyx	L=h¢yx
कुम्हार	कुम्हारिन
जुलाहा	जुलाहिन
नाई	नाइन
पड़ोसी	पड़ोसिन
लुहार	लुहारिन
चमार	चमारिन
सुनार	सुनारिन

6- *uh* çR;; I cuu oky L=h¢yx 'kCn ¼v& vuh½

i¢Yyx	L=h¢yx
शेर	शेरनी
मोर	मोरनी
चोर	चोरनी
भील	भीलनी

7- *buh* çR;; I cuu oky L=h¢yx 'kCn ¼v] Ã&buh A – इणी) : शब्दांत में 'अ' आने वाले शब्दों में – 'नी' प्रत्यय 'अ' के स्थान पर आ जाता है। परन्तु कुछ शब्दों में जिनके अंत में 'ई' स्वर आता है– 'नी' प्रत्यय लगने से पूर्व 'ई' 'इ' (हस्व) में बदल जाता है। जैसे:

i¢Yyx	L=h¢yx
हाथी	हथिनी
स्वामी	स्वामिनी
तपस्वी	तपस्विनी
अभिमानी	अभिमानिनी
हंस	हंसिनी
यशस्वी	यशस्विनी

8- ^bdk* çR;; tkMdj ¼vd & bdk½

i¢Yyx	L=h¢yx
संयोजक	संयोजिका
परिचायक	परिचायिका
गायक	गायिका
बालक	बालिका
नायक	नायिका
पाठक	पाठिका
अध्यापक	अध्यापिका

9- dN lKk 'kCn ftudk vUr esa & *oku@eku* vkrk gS mudk LFkku ij *orh@erh* L=h çR;; yxkdj L=hçyx 'kCn cuk, tkrs gSA tSls %

iqfYyx	L=hfyx
गुणवान	गुणवती
भगवान	भगवती
भाग्यवान	भाग्यवती
शक्तिमान	शक्तिमती
श्रीमान	श्रीमती
सत्यवान	सत्यवती
बुद्धिमान	बुद्धिमती

10- dN 'kCnksa esa ey 'kCn L=hfyxokph gksrs gS vkSj muesa çR;; tksMdj iqfYyx :i cuk, tkrs gSA tSls%

iqyx	L=hfyx
जीजा	जीजी
ननद	ननदोई
मौसा	मौसी
बहनोई	बहन

हिंदी में कुछ स्त्री प्रत्यय संस्कृत से आए हैं और उसी के अनुसार हिन्दी में स्त्रीलिंग शब्द बनते हैं। tSls%

11- *vk* çR;; tksMdj ¼v&vk½

iqfYyx	L=hfyx
प्रिय	प्रिया
छात्र	छात्रा
सुत	सुता
बाल	बाला
पूज्य	पूज्या
आचार्य	आचार्या
प्रियतम	प्रियतमा

12- dN rRle 'kCnksa esa rk* dks *=h* djus ls ¼rk&=h½

iqfYyx	L=hfyx
वक्ता	वक्त्री
विधाता	विधात्री
दाता	दात्री
धाता	धात्री
अभिनेता	अभिनेत्री
रचयिता	रचयित्री

13- ^fuR;* iqfYyx ;k *fuR;* L=hfyx 'kCnksa esa eknk ;k uj 'kCn yxkus ls&

iqfYyx	L=hfyx
नर मक्खी	मक्खी
नर चील	चील
नर छिपकली	छिपकली
नर कोयल	कोयल
भेड़िया	मादा भेड़िया
खरगोश	मादा खरगोश
गैंडा	मादा गैंडा
भालू	मादा भालू

14- fHkUu :i okys L=hfyx 'kCn & हिंदी में अनेक संज्ञा शब्द ऐसे भी हैं जिनके पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्दों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। tSls%

iqfYyx	L=hfyx
भाई	भाभी
नर	मादा/नारी
वर	वधू
विद्वान	विदुषी
पति	पत्नी
नपुंसक	बाँझ
बिलाव	बिल्ली
वीर	वीरांगना
मियाँ	बीवी
बुआ	फूफा

वचन

शब्द के जिस रूप से एक या एक से अधिक का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं। हिन्दी में मूल शब्दों के बहुवचन रूप प्रायः शून्य (0) '–ए', 'एँ' तथा 'औं' प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं। वचन परिवर्तन के नियम इन्हीं प्रत्ययों के लगने पर निर्भर करते हैं। **tSls**

1- *&,* çR;; tksMdj

आकारान्त शब्दों के अंतिम 'आ के स्थान पर '–ए' प्रत्यय लग जाता है। **tSls**

,dopu	cgqopu
लड़का	लड़के
रास्ता	रास्ते
कमरा	कमरे
दाना	दाने
भाला	भाले
कपड़ा	कपड़े
बच्चा	बच्चे
लोटा	लोटे

2- *&,¡* çR;; tksMdj

(क) व्यंजनान्त (–अ अन्त वाले) मूल शब्दों में 'अ' स्वर का लोप हो जाता है और उसके स्थान पर '–ऐं' बहुवचन सूचक प्रत्यय लग जाता है। **tSls**

,dopu	cgqopu
नहर	नहरें
बोतल	बोतलें
कलम	कलमें
दीवार	दीवारें
सड़क	सड़कें
चीज	चीजें
बाँह	बाँहें

(ख) आकारान्त/ऊकारान्त/औकारांत आदि शब्दों में अन्तिम स्वर का लोप नहीं होता। अंतिम स्वर के बाद '–एँ' प्रत्यय जुड़ जाता है। ('अ' को ह्रस्व कर देते हैं) **tSls**

,dopu	cgqopu
महिला	महिलाएँ
कविता	कविताएँ
शाला	शालाएँ
वधू	वधुएँ
माता	माताएँ
दवा	दवाएँ
पुस्तक	पुस्तकें
गौ	गौएँ

3- *&vk¡* çR;; tksMdj

जब ईकारान्त संज्ञा शब्दों में '–ओं बहुवचन सूचक प्रत्यय लगता है तो अंतिम स्वर 'ई' का परिवर्तन ह्रस्व 'इ' में हो जाता है तथा 'इ' और 'आँ के मध्य 'य' व्यंजन का आगम हो जाता है। **tSls** दासी + आँ + य् + आँ – दासियाँ।

,dopu	cgqopu
गृहिणी	गृहिणियाँ
पंक्ति	पंक्तियाँ
स्त्री	स्त्रियाँ
नारी	नारियाँ
गली	गलियाँ
बुढ़िया	बुढ़ियाँ
शक्ति	शक्तियाँ
लड़की	लड़कियाँ
रीति	रीतियाँ
नदी	नदियाँ

4- 'kwU; çR;; tksMdj

शून्य प्रत्यय जोड़ने का अर्थ इतना ही है कि कुछ संज्ञा शब्दों के एकवचन और बहुवचन मासिक रूप से समान रहते हैं। **tSls** पानी, प्रेम, प्यार, भय, क्रोध, दाना, इत्यादि।

5- हिंदी में कुछ शब्दों के बहुवचन बनाने के लिए मूल शब्दों के साथ 'वर्ग', 'वृंद', 'गण', 'लोग', 'जन' आदि समूहवाची शब्द जोड़ दिए जाते हैं।

t|l% कर्मचारी वर्ग, पक्षीवृंद, असभ्य लोग, विद्वज्जन, लेखकगण आदि।

6- हिंदी में कुछ शब्द हमेशा बहुवचन रूप में ही प्रयुक्त होते हैं।

t|l% आँसू, केश, समाचार, दर्शन, प्राण, हस्ताक्षर, लोग, प्रजा, रोम, होश आदि।

उदाहरणः

(क) समाचार मिलते ही उसके आँसू उमड़ पड़े।

(ख) आपके दर्शन के लिए लोग इकट्ठे हो गए हैं।

(ग) उसके प्राण न निकल सके।

(घ) उसके बाल बत घंघराले हैं।

7- इसी तरह से कुछ ऐसे संज्ञा शब्द भी है जो हमेशा एकवचन में ही आते हैं।

t|l% क्रोध, क्षमा, छाया, प्रेम, जल, जनता, पानी, दुध, वर्षा, हवा, आग आदि।

उदाहरणः

(क) इस वर्ष वर्षा नहीं होगी।

(ख) हवा बहुत तेज़ चल रही थी।

(ग) वहाँ आग जल रही थी।

8- सम्मान अथवा आदर दिखाने के लिए भी हिंदी में एकवचन संज्ञा शब्दों का प्रयोग बहुवचन के रूप में किया जाता है।

उदाहरणः

(क) माता जी दिल्ली जा रही हैं।

(ख) गांधी इस देश के राष्ट्रपिता थे।

(ग) अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे हैं।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका (संज्ञा या सर्वनाम का) संबंध सूचित हो, उसे (उस रूप को) 'कारक' कहते हैं।

कारक के भेद

हिंदी में कारक **vkB** हैं और कारकों के बोध के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय (चिह्न) लगाए जाते हैं, उन्हें व्याकरण में 'विभक्तियाँ' कहते हैं।

dkjd	foHkfDr ;k
कर्त्ता	ने
कर्म	को
करण	से
संप्रदान	को, के लिए
अपादान	से
संबंध	को, के, की; रा, रे, री
अधिकरण	में, पर
संबोधन	हे, अजी, अहो, अरे इत्यादि

कर्त्ताकारक

वाक्य में जो शब्द काम करने वाले के अर्थ में आता है, उसे 'कर्त्ता' कहते हैं। **t|l&** 'मोहन खाता है।' इस वाक्य में खाने का काम मोहन करता है।

कर्मकारक

वाक्य में क्रिया का फल जिस शब्द पर पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्मकारक का प्रत्यय चिन्ह 'को' है। बिना प्रत्यय के या अप्रत्यय कर्म के कारक का भी प्रयोग होता है। इसके नियम हैं –

1- बुलाना, सुलाना, कोसना, पुकारना, जगाना, भगाना इत्यादि क्रियाओं के कर्मों के साथ 'को' विभक्ति लगती है।

t|l&

(i) उमा ने गौरी को जी भर कोसा।

(ii) पिता ने पुत्र को पुकारा।

2- 'मारना' क्रिया का अर्थ जब 'पीटना' होता है, तब कर्म के साथ विभक्ति लगती है, पर यदि उसका अर्थ 'शिकार करना' होता है, तो विभक्ति नहीं लगती, अर्थात् कर्म अप्रत्यय रहता है। **t|l&**

(i) लोगों ने चोर को मारा।

(ii) हरि ने बैल को मारा।

3- बहुधा कर्त्ता में विशेष कर्तृत्वशक्ति जताने के लिए कर्म सप्रत्यय रखा जाता है।

t|l|&

(i) मैंने यह तालाब खुदवाया है।

(ii) मैंने इस तालाब को खुदवाया है।

(iii) दोनों वाक्यों में अर्थ का अंतर ध्यान देने योग्य है।

करणकारक

वाक्य में जिस शब्द से क्रिया के संबंध का बोध हो, उसे करणकारक कहते हैं।

करणकारक के सबसे अधिक प्रत्ययचिह्न हैं। 'ने' भी करणकारक का ऐसा चिह्न है, जो करणकारक के रूप में संस्कृत में आए कर्ता के लिए 'एन' के रूप में, कर्मवाच्य और भाववाच्य में आता है। हिंदी में करणकारक के अन्य चिह्न हैं – से, द्वारा, के द्वारा, के जरिए, के साथ, के बिना इत्यादि।

t|l| &

(i) वह कुल्हाड़ी से वृक्ष काटता है।

(ii) मुझे अपनी कमाई से खाना मिलता है।

(iii) साधुओं की संगति से बुद्धि सुधरती है।

संप्रदानकारक

जिसके लिए कुछ किया जाए या जिसको कुछ दिया जाए, इसका बोध करानेवाले शब्द के रूप को संप्रदानकारक कहते हैं।

t|l|&

(i) हरि मोहन को रुपये देता है।

(ii) माँ ने बच्चे को खिलौने खरीदे।

अपादानकारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के अलग होने का भाव प्रकट होता है, उसे अपादानकारक कहते हैं। जिस शब्द में अपादान की विभक्ति लगती है, उससे किसी दूसरी वस्तु के पृथक् होने का बोध होता है।

t|l| &

(i) हिमालय से गंगा निकलती है।

(ii) मोहन ने घड़े से पानी पिया।

(iii) चूहा बिल से बाहर निकला।

संबंधकारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी अन्य शब्द के साथ संबंध या लगाव प्रतीत हो, उसे संबंधकारक कहते हैं।

इस कारक से अधिकार, कर्तृत्व, कार्य–कारण, मोल–भाव, परिमाण इत्यादि का बोध होता है;

t|l| &

राम की किताब, श्याम का घर, चाँदी की थाली, सोने का गहना, एक रूपए का चावल, पाँच रूपए का घी, सौ मील की दूरी, पाँच हाथ की लाठी।

अधिकरणकारक

क्रिया या आधार को सूचित करनेवाली संज्ञा या सर्वनाम के स्वरूप को अधिकरणकारक कहते हैं।

t|l| &

(i) **og l/;k le; xxk fdukj|** जाता है।

(ii) **ftl le;** वह आया था, **ml le;** मैं नहीं था।

संबोधनकारक

संज्ञा के जिस रूप से किसी के पुकारने या संकेत करने का भाव पाया जाता है, उसे संबोधनकारक कहते हैं।

t|l| &

हे भगवान! मेरी रक्षा कीजिए।

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्नकोष — लिंग, वचन एवं कारक

1. कवि का स्त्रीलिंग शब्द है :

(a) कवित्री (b) कवियत्री

(c) कवयित्री (d) कवियित्री

2. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द सदा बहुवचन में प्रयोग होता है?

(a) शिशु (b) भक्ति

(c) पुस्तक (d) प्राण

3. निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द पुल्लिग है?
(a) आय (b) व्यय
(c) नहर (d) लहर

4. निम्नलिखित में कौन–सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?
(a) झुरमुट (b) अन्त्येष्टि
(c) इच्छा (d) निराला

5. निम्नलिखित में पुल्लिग शब्द है :
(a) सरसों (b) मकई
(c) सारस (d) मूंग

6. निम्नलिखित में पुल्लिग शब्द नहीं है :
(a) रत्न (b) मोती
(c) नकल (d) बचपन

7. निम्नलिखित शब्दों में कौन स्त्रीलिंग नहीं है?
(a) रोटी (b) पूड़ी
(c) पानी (d) नदी

8. निम्नांकित में से कौन–सा शब्द स्त्रीलिंग नहीं है?
(a) सुबह (b) दोपहर
(c) सांझ (d) दिन

9. कारक के भेद हैं :
(a) पाँच (b) छः
(c) सात (d) आठ

10. 'ऋषि' का स्त्रीलिंग है :
(a) ऋषिणी (b) ऋषिपत्नी
(c) ऋषी (d) ऋषिका

11. हिन्दी भाषा में 'वचन' कितने प्रकार के हैं?
(a) 3 (b) 2
(c) 4 (d) 5

12. लिंग की दृष्टि से 'दही' क्या है?
(a) स्त्रीलिंग
(b) पुल्लिग
(c) नपुंसकलिंग
(d) उभयलिंग

13. कौन सा स्त्रीलिंग है?
(a) मित्र (b) सूचना
(c) उपहार (d) अध्याय

14. पुल्लिग और स्त्रीलिंग में से कौन सा जोड़ा सही नहीं है?
(a) मोटा–मोटी
(b) धोबी–धोबिन
(c) दाता–दानी
(d) तेली–तेलिन

15. 'भूखे को अन्न दो और प्यासे को जल' वाक्य किस कारक का है?
(a) सम्प्रदान
(b) अपादान
(c) सम्बन्ध
(d) अधिकरण

16. इनमें से पुल्लिग शब्द कौन–सा है?
(a) दया (b) निर्धनता
(c) बुढ़ापा (d) दुर्घटना

17. 'सुन्दरता' में संज्ञा है:
(a) व्यक्तिवाचक
(b) समूहवाचक
(c) जातिवाचक
(d) भाववाचक

18. 'मित्र' का भाववाचक है:
(a) बन्धुता (b) मीत
(c) मित्रता (d) शत्रुता

19. निम्नलिखित शब्दों में से पुल्लिग शब्द का चयन कीजिए:
(a) सूची–पत्र
(b) किताब
(c) गंगा
(d) संसद

20. कर्मकारक के लिए प्रयुक्त होने वाला चिन्ह है :
(a) ने (b) के लिए
(c) से (d) को

21. 'साधु' का स्त्रीलिंग शब्द है :
(a) साधुनी
(b) साध्वी
(c) साधु आईन
(d) साधुवाइनि

22. 'मैं काम से जा रहा हूँ' वाक्य में 'से' का कारक है :
(a) संप्रदान (b) करण
(c) अपादान (d) अधिकरण

23. हिन्दी के शब्दों का लिंग–निर्धारण किसके आधार पर होता है?
(a) प्रत्यय (b) संज्ञा
(c) क्रिया (d) सर्वनाम

24. 'को' और 'के लिए' किस कारक के चिन्ह है?
(a) सम्प्रदान कारक
(b) कारण कारक
(c) अपादान कारक
(d) संवोधन कारक

25. लड़का पेड़ से गिरा।
उपरोक्त वाक्य में कारक बताइए।
(a) सम्प्रदान कारक
(b) कर्म कारक
(c) अपादान कारक
(d) कारण कारक

26. निम्नलिखित में 'पुल्लिग' शब्द है :
(a) बुढ़ापा (b) जड़ता
(c) पटना (d) दया

27. कौन–सा शब्द 'अव्यय' नहीं है?
(a) आज (b) कल
(c) इधर (d) किसे

28. 'पेड़ पर पक्षी बैठे हैं।' इस वाक्य में 'पेड़ पर' पद में कौन–सा कारक है?
(a) करण (b) अपादान
(c) सम्बन्ध (d) अधिकरण

29. 'वीर' का स्त्रीलिंग है :
(a) वारांगना (b) वीरगति
(c) वीरांगना (d) वीरावती

30. 'दाता' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द क्या है?
(a) दाती (b) दातृ
(c) दात्री (d) यात्री

31. निम्न शब्द में अधिकरण–कारक का प्रयोग हुआ?
(a) वाहनारूढ़
(b) सत्ताधीश
(c) गंगाजल
(d) रेखाचित्र

32. 'को' से किस कारक चिह्न का बोध होता है?
(a) कर्म कारक
(b) करण कारक
(c) सम्प्रदान कारक
(d) अधिकरण कारक

33. 'हे राम! तुम कहाँ हो' वाक्य में कौन–सा कारक है?
(a) संबंध (b) अधिकरण
(c) सम्बोधन (d) अपादान

34. 'कर्म कारक' का चिह्न है :
(a) ने (b) से, द्वारा
(c) को (d) को, के लिये, हेतु

35. 'ठठेरा' शब्द का लिंग परिवर्तित कीजिए।
(a) ठठेरी (b) ठठारी
(c) ठठेरिन (d) ठठेरिनी

36. 'खूटी' शब्द का बहुवचन बताइए।
(a) खूटियाँ (b) खूटियों
(c) खूटिया (d) खूटियौं

37. 'वह अगले साल आएगा'– इस वाक्य में कौन–सा कारक हैं?
(a) अपादान कारक
(b) सम्बन्ध कारक
(c) अधिकरण कारक
(d) कर्म कारक

38. 'विद्वान' शब्द का स्त्रीलिंग क्या होगा?
(a) विदुषी (b) विद्वती
(c) विद्यामती (d) विद्यावंती

39. 'चाकू' शब्द का बहुवचन क्या होगा?
(a) चाकूएँ (b) चाकुओं
(c) चाकुओ (d) चाकू

40. 'सीमा कुत्ते से डरती है।' इस वाक्य में कौन सा कारक है?
(a) अपादान कारक
(b) करण कारक
(c) कर्म कारक
(d) सम्बोधन कारक

41. 'भरोसे' में शब्द का कौन–सा रूप है?
(a) विशेषण
(b) क्रिया–विशेषण
(c) सम्बन्ध बोधक
(d) समुच्चय बोधक

42. निम्नलिखित में से कौन सा स्त्रीलिंग शब्द है?
(a) किन्नर (b) अहिंसा
(c) अंतरी (d) अपरिग्रह

43. निम्न में से पुल्लिंग शब्द है :
(a) रात (b) बात
(c) गीत (d) मात

44. "ऐ राकेश! यहाँ आओ" इस वाक्य में कौन सा कारक है?
(a) अधिकरण कारक (b) सम्बोधन कारक
(c) कर्ता कारक (d) करण कारक

45. 'कुर्सी पर मास्टर जी बैठे हैं' इस वाक्य में 'कुर्सी' शब्द किस कारक में है?
(a) करण कारक (b) सम्प्रदान
(c) संबंध (d) अधिकरण

46. 'रमा विद्यालय से घर जाती है' में कारक है
(a) अपादान (b) कर्ता
(c) कर्म (d) सम्बन्ध

47. 'नायक' शब्द का स्त्रीलिंग है
(a) नायिका (b) नायकी
(c) नायिकाएँ (d) नायकि

48. 'राम की गाय चरती है' वाक्य में कौन–सा कारक है?
(a) कर्ता (b) कर्म
(c) सम्बन्ध (d) अधिकरण

उत्तरमाला ➤ लिंग, वचन एवं कारक

1. (c)	2. (d)	3. (b)	4. (d)	5. (c)	6. (c)	7. (c)	8. (d)	9. (d)
10. (d)	11. (b)	12. (b)	13. (b)	14. (c)	15. (a)	16. (b)	17. (d)	18. (c)
19. (a)	20. (d)	21. (b)	22. (b)	23. (c)	24. (a)	25. (c)	26. (a)	27. (c)
28. (d)	29. (c)	30. (c)	31. (a)	32. (a)	33. (c)	34. (c)	35. (c)	36. (a)
37. (c)	38. (a)	39. (d)	40. (a)	41. (c)	42. (b)	43. (c)	44. (b)	45. (d)
46. (a)	47. (a)	48. (c)						